DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-2 ,UNIT-8,
ROLE OF PSYCHOLOGICAL FACTORS IN POPULATION EXPLOSION
LECTURE-61

जनसंख्या विस्फोट में मनोवैज्ञानिक कारकों की भूमिका

(Role of psychological factors in population explosion)

भारत की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या की 16.०%है |

चीन के बाद भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है |यदि जनसंख्या में बढ़ोतरी कायम रही तो 2035 तक भारत चीन को पीछे छोड़ संसार का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र बन जायेगा |जनसँख्या में इस बढ़त के कई कारण है जिन्हें मुख्य तौर पर दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है –

मनोवैज्ञानिक कारक तथा गैर मनोवैज्ञानिक कारक |

मनोवैज्ञानिक कारको में उन कारको को रखा गया है जो व्यक्ति के विश्वास ,विचार,मनोवृत्ति ,मत,धारणा आदि से सम्बन्ध होते

है तथा गैर मनोवैज्ञानिक कारको में उन कारको को रखा गया है जिनमे इन मनोवैज्ञानिक धारणो से भिन्न तथा आर्थिक कारण ,सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्थाएँ आदि मुख्य है |

कुछ मनोवैज्ञानिक कारक निम्नलिखित है –

1. **परिवार नियोजन के प्रति मनोवैज्ञानिक धारणाएं (psychological views about family planning)**-सरकार एवं अन्य समानांतर संस्थानों द्वारा जनसँख्या में वृद्धि को रोकने के लिए परिवार नियोजन के विभिन्न तरह के साधनों के उपयोग पर बल डाला गया है | समाज का कुछ ऐसा वर्ग है जिसमे परिवार के नियोजन के प्रति उत्तम धारणाएँ होती है परन्तु समाज का एक बड़ा वर्ग ऐसा भी है जिसमे परिवार नियोजन को अप्राकृतिक समझा जाता है और उसके साधनों के बारे में बातचीत करना भी अव्यावहारिक माना जाता है |जैसे ,एल०एन०के०सिन्हा एवं अंसारी (L.N.K SINHA & ANSAARI,1975) ने कॉलेज छात्रो एवं नौकरी करने वाले व्यक्तियों की मनोवृति परिवार नियोजन के प्रति अनुकूल पाया | प्रताप एवं एस० के० श्रीवास्तव (1982) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च एवं निम्न सामाजिक –आर्थिक स्तर दोनों ही श्रेणियों के लोगों में परिवार नियोजन के अनुकूल मनोवृति होती है |परन्तु दलित ,जनजातियों एवं अन्य अलाभान्वित समूहों में किये

गये अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि इन लोगो की धारणाएँ परिवार नियोजन के प्रति प्रतिकूल होता है जिसके कारण इन लोगों का योगदान जनसंख्या वृद्धि में तुलनात्मक रूप से अधिक होती है |

2. **मनोरंजन के साधन का अभाव (LACK OF MEANS OF ENTERTAINMENT)**–यधपि आज के युग में रेडियो ,दूरदर्शन,सिनेमा,नाटक ,आदि मनोरंजन के मुख्य साधन के रूप में उभर कर लोगो के सामने आये है फिर भी मनोरंजन का यह साधन शहरी क्षेत्रों तक ही लगभग सिमट कर रह गया है |इसका परिणाम यह होता है कि ग्रामीण क्षेत्रो रहने वाले स्त्री –पुरुष मनोरंजन से लगभग वंचित रह जाते है |परिणाम: यौन व्यवहार को ही वे अपना मनोरंजन का साधन बना लेते है जिसका स्वभाविक प्रभाव जनसंख्या में अप्रत्याशित बढत होती है |दुसरे शब्दों में पुरुष तथा स्त्री घर की ओर आकर्षित होने लगती है और जनसंख्या के बढत में योगदान करती है |
3. **शिक्षा का अभाव (lack of education)**-आज भी भारत के संपूर्ण जनसंख्या का बड़ा हिस्सा अशिक्षित है या न्यून शिक्षित है |अशिक्षित या न्युनशिक्षित होने से व्यक्तियों की संज्ञानात्मक क्षमता भी अविकसित रह जाती है |परिणामत: ऐसे व्यक्ति परिवार के बड़ा होने के कुपरिणाम को ठीक

ढंग से न तो सोच पाते है और ना ही समझ पाते है |इसका स्वभाविक परिणाम यह होता है की उनका योगदान जनसँख्या बढ़त में बिना किसी तरह के रोक टोक के होते जाते है |दुसरे तरफ जो लोग शिक्षित होते है ,उनकी मनोवैज्ञानिक समझ एवं सचेतता अधिक होने के कारण परिवार के आकार को सिमित रखने में वे लोग विश्वास अधिक रखते है |

4. **सुरक्षा भाव की कमी (lack of feeling of security)**-भारतीय जनता में असुरक्षा के भाव की इधर बढ़त हुयी है |सरकार की और से सामाजिक सुरक्षा की समुचित प्रबंध न होने के कारण लोग बच्चो को बुढापे की लाठी मानते है और अधिक से अधिक संतान उत्पत्ति को आवश्यक मानते है | कुछ अध्ययनों में यह देखा गया है की इस दल का विश्वास समाज के कमजोर एवं अलाभान्वित वर्ग के व्यक्तियों में अधिक होता है |
5. **स्त्रियों में निर्भरता का भाव (feeling of dependency among women)**-भारत में पहले की तुलना में स्त्री शिक्षा में बढ़ोतरी होने के बावजूद भी अधिकाँश स्त्रियाँ पुरुषो पर आश्रित होती है और रूप से निर्बल है |अतः पुरुषो की अपेक्षा उनके लिए विवाह अधिक अनिवार्य हो जाता है |जो जनसँख्या बढ़ोतरी का एक महत्वपूर्ण कारण है |

6. **अविवेकपूर्ण मातृत्व (improvident maternity)**-भारत में ऊँची जन्म दर का कारण स्वयं ऊँची मृत्यु दर है ऊँची मृत्यु दर होने के कारण भारतीयों माताओं को यह विश्वास ही नहीं रहता है की उनके सभी बच्चे जीवित रहेंगे |इसलिए वे अधिक बच्चो को जन्म देने में ही विश्वास करती है ताकि उनके बच्चो में से कुछ की मृत्यु भी हो जाए तो भी शेष कुछ बचे रहे | यदि हम दो बच्चो की आदर्श संख्या मान ले तो 2 से अधिक होने वाली सभी जन्म को अविवेकपूर्ण मातृत्व कहा जाएगा |
7. **धार्मिक एवं सामाजिक अंधविश्वास (Religious and social supersition)**-एक साधारण भारतीय नागरिक बच्चो को ईश्वर का देन मानता है और उसमे वह किसी प्रकार का हस्तक्षेप ठीक नहीं समझता है |इसलिए वह बच्चे के जन्म पर रोक नहीं लगाता |

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है की जनसंख्या में बढ़ोतरी के अनेक कारण है | इन कारणों को दूर करके बहुत हद तक जनसंख्या में बढ़त की प्रवृति को रोका जा सकता है |